

FREE

मुसकान 3

प्रथम भाषा हिंदी
कक्षा - 3 की पाठ्यपुस्तक

Hindi Reader
(First Language)
Class - III



तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

बच्चों! इन सूचनाओं पर ध्यान दीजिए...

* यह पाठ्यपुस्तक आप के स्तर और रुचियों के अनुरूप बनायी गयी है। इससे आप भाषा के सभी कौशलों का विकास कर सकते हैं। इसके लिए आप अध्यापक का मार्गदर्शन व सहयोग ले सकते हैं।

* पाठ व अभ्यास करने के लिए गाइड, सब्जेक्ट मटेरियल, क्वश्चन बैंक आदि का उपयोग नहीं करना चाहिए। इनके अतिरिक्त 'शब्दकोश' का उपयोग करने से पाठ व अभ्यास आसानी से कर सकते हैं। इसके साथ-साथ समाचार पत्र, पुस्तकालय की पुस्तकें, बाल साहित्य आदि का पठन करना चाहिए, जिससे रचनात्मक व सारांशात्मक आकलन के उत्तर आसानी से लिख सकते हैं।

* हर पाठ के प्रारंभ में उन्मुखीकरण का चित्र दिया गया है। इस चित्र के माध्यम से आप सबसे पहले संज्ञा शब्दों, तत्पश्चात क्रिया शब्दों की और सोच-विचार के वाक्यों की पहचान करनी चाहिए।

* हर पाठ में 'सुनिए-बोलिए' अभ्यास के प्रश्न दिये गये हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर सोच-विचार के देने चाहिए। इन प्रश्नों के उत्तर विचारात्मक होने चाहिए। इससे आपकी बौद्धिक क्षमता का विकास होगा।

* हर पाठ में 'पढ़िए' अभ्यास के प्रश्न दिये गये हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर पाठ पढ़कर देने चाहिए। पढ़ो अभ्यास का उद्देश्य आपमें पढ़ने व अर्थग्राह्यता की क्षमता का विकास करना है।

* हर पाठ में 'लिखिए' अभ्यास के प्रश्न दिये गये हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में देना चाहिए। इसे हम 'स्वरचना' भी कहते हैं। आपको अपने विचार लिखित रूप में व्यक्त करना चाहिए।

* हर पाठ में 'शब्द-भंडार' व 'भाषा की बात' के अभ्यास दिये गये हैं। इन अभ्यासों का हल समूहों में बैठकर करना चाहिए। आवश्यकतानुसार अध्यापक का सहयोग लेना चाहिए।

* 'परियोजना कार्य' स्वयं करके सीखने का कार्य है। इसे व्यक्तिगत या समूह में बैठकर करना चाहिए।

* हर पाठ में 'सृजनात्मक अभिव्यक्ति' के प्रश्न दिये गये हैं। इन प्रश्नों के उत्तर मौखिक, लिखित अथवा प्रदर्शन (अभिनय) के रूप में देने चाहिए जिससे आप में भाषा का सृजनशील विकास होगा।

* स्वमूल्यांकन के लिए 'क्या मैं ये कर सकता हूँ?' शीर्षक से एक तालिका दी गयी है। आपको अपनी भाषाई क्षमता की जाँच स्वयं करनी चाहिए।



भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य—भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह—

- (क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे,
- (ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे,
- (ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे,
- (घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे,
- (ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों,
- (च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे,
- (छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे,
- (ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और जनार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे,
- (झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे,
- (ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके।

मुसकान - 3

प्रथम भाषा हिंदी कक्षा तीन की पाठ्यपुस्तक

Class-III Hindi (First Language)

संपादक मंडल

प्रो. टी. वी. कट्टीमनी

अध्यक्ष, हिंदी विभाग, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद

प्रो. शकुंतला रेड्डी

क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद

प्रो. शुभदा वांजपे

प्रोफेसर, उस्मानिया विश्वविद्यालय

शैक्षिक सलाहकार

डॉ. रमाकांत अग्निहोत्री

सेवानिवृत्त प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय

श्री सुवर्ण विनायक

शैक्षिक सलाहकार, एस. सी. ई. आर. टी., तेलंगाणा राज्य

समन्वयक

डॉ. पी. शारदा

हिंदी विभाग, एस. सी. ई. आर. टी., तेलंगाणा राज्य

पाठ्य पुस्तक विकास एवं प्रकाशन समिति

श्रीमती बी. शेषु कुमारी

निदेशक, एस. सी. ई. आर. टी., तेलंगाणा राज्य

डॉ. एन. उपेंद्र रेड्डी

प्रोफेसर, सी एंड टी, एससीईआरटी, तेलंगाणा राज्य

श्री बी सुधाकर

निदेशक, सरकारी पुस्तक प्रकाशनालय, तेलंगाणा राज्य



तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

विद्या से आगे बढ़ो।

विनय से रहो।

क़ानून का आदर करो।

अधिकार प्राप्त करो।



© Government of Telangana State, Hyderabad.

First Published 2012

New Impressions 2014, 2015, 2017, 2018, 2019, 2020

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means without the prior permission in writing of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser.

The copy right holder of this book is the Director of School Education, Hyderabad, Telangana State.

This Book has been printed on 70 G.S.M. Maplitho
Title Page 200 G.S.M. White Art Card

తెలంగాణా రాజ్య सरकार द्वारा निःशुल्क वितरण 2020-21

Printed in India
at Telangana State Govt. Text Book Press,
Mint Compound, Hyderabad,
Telangana State.

— o —

सहभागी गण

डॉ. पी. शारदा

हिंदी विभाग,
एस. सी. ई. आर. टी., तेलंगाणा राज्य, हैदराबाद

श्री सुरेश कुमार मिश्रा 'उत्तुप्त'

राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

डॉ. शेख अब्दुल ग़नी

एस.ए. हिंदी, जी.एच. एस. रामन्नापेट, नलगोंडा

श्री सैयद मतीन अहमद

राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

डॉ. राजीव कुमार सिंह

राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

डॉ. सैयद एम. एम. वजाहत

राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

श्रीमती एन. हेमलता

राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

विषय सलाहकार

श्री कुमार अनुपम

संसाधक, विद्या भवन संदर्भ केंद्र
उदयपुर, राजस्थान

श्री पुष्पराम राणावत

संसाधक, विद्या भवन संदर्भ केंद्र
उदयपुर, राजस्थान

श्री अनुशब्द

संसाधक, विद्या भवन संदर्भ केंद्र
उदयपुर, राजस्थान

चित्रांकन

श्री कुरेल्ला श्रीनिवास

नलगोंडा, तेलंगाणा राज्य

श्री अलवाला किशोर

नलगोंडा, तेलंगाणा राज्य

हमें ज्ञात है कि बालक भाषा अधिगम साधारणतया सहज व व्यावहारिक रूप में करते हैं। इन बातों व एनसीएफ-2005, आरटीई-2009, एससीएफ-2010 एवं आधार पत्र-2011 के सुझावों को ध्यान में रखते हुए इस पाठ्य-पुस्तक का सृजन किया गया है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मजबूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज्ञा दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों को अनदेखा किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

यह उद्देश्य स्कूल की दैनिक जिंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है, जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा, हैदराबाद प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से एनसीईआरटी की ओर से गठित पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व आभार व्यक्त करती है। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा, हैदराबाद टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी। जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

श्रीमती बी. शेषु कुमारी

निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
तेलंगाणा राज्य, हैदराबाद

आभार

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा राज्य, हैदराबाद, ने तीसरी कक्षा प्रथम भाषा हिंदी के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद की तीसरी कक्षा हिंदी की रिमझिम-3 शीर्षकीय पुस्तक के पाठों को लेकर, एससीएफ-2011 में बताये गये मानदंडों के आधार पर अभ्यास जोड़े गये। रिमझिम-3 के अभ्यासों के अतिरिक्त सुनिए-बोलिए, सृजनात्मक अभिव्यक्ति, शब्द-भंडार, प्रशंसा, भाषा परियोजना कार्य जोड़े गये हैं। हर पाठ का आरंभ एक प्रस्तावना चित्र, प्रश्न, सूचनाओं के साथ हुआ है। इस तरह बनायी गयी पाठ्यपुस्तक का नाम मुसकान-3 रखा गया है। रिमझिम-3 के पाठों व अभ्यासों को स्वीकारने की अनुमति देने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली के हम आभारी हैं। पाठ्यपुस्तक के विकास एवं निर्माण हेतु प्रशिक्षण देने के लिए प्रो. रमाकांत अग्निहोत्री, पाठों के चयन तथा सुझाव देने के लिए विद्या भवन सोसायटी के विषय विशेषज्ञों को विशेष आभार प्रकट किया जाता है।

पुस्तक के विकास में सहयोग के लिए हम प्रोफेसर कृष्ण कांत वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. के प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने हर संभव सहयोग दिया।

परिषद उन समस्त रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करती है, जिनकी रचनाएँ पुस्तक में शामिल की गई हैं। रचनाओं के प्रकाशनार्थ अनुमति देने के लिए निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली (क्योंजीमल और कैसे कैसलिया); निदेशक, चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली (जब मुझे साँप ने काटा); निदेशक, नेशनल काउंसिल फॉर साइंस एंड टेक्नालॉजी कम्यूनिकेशन, नई दिल्ली (पत्तियों का चिड़ियाघर); प्रकाशक, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली (सबसे अच्छा पेड़); प्रकाशक, नवनीत पब्लिकेशंस इंडिया लिमिटेड, दादर, मुंबई (शेखीबाज मक्खी); प्रकाशक, राजपाल एंड संस, दिल्ली (बंदर बाँट एवं बहादुर बित्तो); मुख्य संपादक, रत्नासागर प्रकाशन, दिल्ली (टिपटिपवा); प्रकाशक, सफ़रदर हाशमी मेमोरियल ट्रस्ट, नई दिल्ली (सर्दी आई); प्रकाशक, एकलव्य, भोपाल (चाँद वाली अम्मा); पूनम सेवक, बरेली (हमसे सब कहते हैं) के हम आभारी हैं। नेशनल मिशन फॉर मैन्यूस्क्रिप्ट्स, नई दिल्ली द्वारा सहयोग प्रदान किए जाने के लिए हम आभार व्यक्त करते हैं।

निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन, नई दिल्ली एवं संग्रहालयाध्यक्ष, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के प्रति भी हम कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं, जिन्होंने अपनी संस्था के पुस्तकालय के उपयोग की हमें सहर्ष अनुमति दी।

मुख्य अध्यापक, नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, कापसहेड़ा, समालखा एवं बिजवासिन ने हमें अपने विद्यालयों में बच्चों तथा शिक्षकों से किताब के संबंध में बातें करने का अवसर दिया, इसके लिए हम आभार व्यक्त करते हैं।

पुस्तक के विकास में सहयोग के लिए हम आरती गौनियाल, सहायक शिक्षिका, सर्वोदय विद्यालय, कैलाश एन्कलेव, सरस्वती विहार, नई दिल्ली; योगिता शर्मा, सहायक शिक्षिका, नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, मधु विहार, नई दिल्ली; रीता भगत, शिक्षिका, केंद्रीय विद्यालय, सेक्टर 4, आर.के. पुरम, नई दिल्ली; श्रीप्रसाद, बाल साहित्यकार, ब्रजभूमि, एन. 9/87, डी 77, जानकीनगर, ब्रजडीहा, वाराणसी के प्रति आभारी हैं।

अध्यापकों के लिए सूचनाएँ

बच्चों के हाथ में जैसे ही कोई नई किताब आती है, वे झट से उसे उलटना-पलटना शुरू कर देते हैं। उनमें एक स्वाभाविक उतावलापन होता है – चित्र निहारने का, कविता और कहानियों के बारे में जानने का या स्वयं उन्हें पढ़ डालने का। इस पाठ्यपुस्तक ने उनकी इस स्वाभाविक प्रवृत्ति का भरपूर फ़ायदा उठाने की कोशिश की है। किताब के लिए ऐसी कविताओं और कहानियों को चुना गया है, जिनमें बच्चों की बातचीत, उनकी आदतें, उनके नखरे, ज़िद, उनके सवाल साफ़-साफ़ झलकते हैं। इसलिए बच्चे ऐसी कविताओं या कहानियों से विचार और भावनाओं के स्तर पर एक जुड़ाव महसूस करेंगे।

- ❑ कक्षा दो तक बच्चा काफी हद तक **पढ़ना** सीख लेता है, पर कई स्तरों पर भाषा का विकास अभी भी हो रहा होता है। पढ़ने में मुश्किलें अभी भी आती ही हैं। मुश्किल आने पर बच्चा उससे कैसे जूझा; वह कौन-सा तरीका उपयोग में लाया; यह निश्चित करता है कि बच्चा पढ़ने में कितना कौशल प्राप्त कर पाया है। पढ़ने के बढ़ते अनुभव के साथ-साथ इन मुश्किलों का सामना करने का तरीका भी बदल जाता है। बच्चे पढ़ते समय लिखी गई बात की तुलना बार-बार उन बातों से करते हैं जो वे पहले से जानते हैं (पूर्व-ज्ञान)। पठन सामग्री को बच्चा तभी समझ पाता है, जब पूर्व ज्ञान से उस सामग्री का संबंध बनता है। बच्चों को जितना ज़्यादा पढ़ने को मिलेगा, पढ़ने में उनका आत्मविश्वास और रुझान उतना ही बढ़ेगा। इस बात को दृष्टिगत रखते हुए कुछ रचनाएँ केवल पढ़ने और उनमें इत्मीनान से डूबने के लिए ही दी गई हैं। ये रचनाएँ कहीं न कहीं किसी और रचना से जुड़ी हैं – कहीं विषय-वस्तु के स्तर पर तो कहीं विधा के स्तर पर। इस तरह कहीं पर बच्चे एक विषय की समझ को बढ़ाकर उसे और सुदृढ़ कर पाएँगे तो कहीं और नई जानकारी इकट्ठा कर पाएँगे। इन्हें पढ़ने में बच्चों को रस तो मिलेगा ही, उनमें पढ़ने के प्रति रुचि, आदत तथा ललक भी जगेगी।
- ❑ पाठों के अंत में **अभ्यास प्रश्न** दिए गए हैं। इन अभ्यासों को विषय सामग्री के विविध पहलुओं की जटिलता के स्तर को ध्यान में रखते हुए दिया गया है। इनमें से कई प्रश्नों का उद्देश्य सूचना प्राप्त करना या बच्चों की जानकारी मापना नहीं बल्कि उन्हें बोलने और चर्चा करने का अवसर देना है। ऐसे अभ्यासों को धैर्यपूर्वक करवाएँ। किताब में दिए गए ऐसे प्रश्न केवल उदाहरण के रूप में हैं। आप ऐसे अन्य प्रश्न अपनी कल्पना से भी जोड़ सकती हैं। अभ्यास प्रश्नों के ज़रिए पाठ से जुड़ी भाषा की बारीकियों की ओर भी बच्चों का ध्यान खींचने का प्रयास किया गया है। अभ्यासों के अंतर्गत बच्चों को कई चीज़ें बनाने को दी गई हैं। इनसे स्वयं बनाने का आनंद तो बच्चों को मिलेगा ही, साथ ही निर्देश पढ़कर समझने की क्षमता का भी विकास होगा। किताब में अनेक गतिविधियाँ दी गई हैं। आप अनेक तरीकों से उनका इस्तेमाल कर सकती हैं।
- ❑ अभ्यास सिर्फ यह आँकने के लिए नहीं होते कि कहानी, कविता या पाठ बच्चों को कितना याद है।

अभ्यास उन्हें पाठों से **भावनात्मक रूप से जुड़ने का मौका** भी देते हैं। जब तक बच्चे किसी पाठ से भावनात्मक रूप से नहीं जुड़ेंगे, उसे अपने अनुभव से नहीं जोड़ सकेंगे तब तक उनकी पाठ की 'समझ' पूरी नहीं होगी। पूरी 'समझ' बनने पर ही बच्चे तथ्यपरक प्रश्नों के अतिरिक्त अन्य प्रश्नों के उत्तर भी दे सकेंगे।

- ❑ **कल्पना** करना या **अभिव्यक्ति** का अर्थ सिर्फ कहानी या कविता लिखना ही नहीं होता है। जब हम दूसरों के नज़रिए से घटना को देखते हैं, कहानी के अलग-अलग मोड़ों पर अनुमान लगाते हैं, कहानी खत्म होने के बाद भी कहानी सुनाते हैं, कहानी में घटित घटनाओं की तस्वीर अपने मन में बनाते हैं तो ये सभी हम कल्पना और अभिव्यक्ति की सहायता से करते हैं।
- ❑ बच्चों को अभिव्यक्ति का भरपूर मौका मिले, इसके लिए उन्हें सिर्फ पाठों की घटनाओं तक सीमित न रखें। बच्चों को नई-नई जगहों से, **नए-नए स्रोतों से जानकारी** इकट्ठी करने दें, उसके बारे में लिखने और बात करने दें। ऐसा करने से बच्चे उन ज़रूरतों से जुड़ी भाषा का इस्तेमाल करना सीखेंगे। नई जानकारीयाँ एकत्रित करना, उनका विश्लेषण और उन पर तर्क करना बच्चों को अन्य विषयों की परिधि में ले जाते हैं।
- ❑ कल्पना के अलावा बच्चे भाषा का उपयोग **तर्क** करने, गौर से देखी गई चीज़ों पर बात करने और उनका **विश्लेषण** करने के लिए करते हैं।

बच्चों में ये कौशल जितने विकसित होंगे, वे उतने ही स्पष्ट, सटीक और तार्किक ढंग से भाषा का इस्तेमाल कर सकेंगे। उनकी अभिव्यक्ति उतनी ही प्रभावशाली होगी।

- ❑ बच्चे भले ही भाषा के नियमों और व्याकरण की शब्दावली की बात न कर सकें पर इन नियमों को वे घर और अपने आसपास भाषा सुनते-सुनते सहज रूप से सीख जाते हैं। सहज रूप से भाषा के नियम सीखने की यह प्रक्रिया स्कूल में भी जारी रहनी चाहिए। इसलिए इस किताब में व्याकरण की बात अलग से न करके पाठों के संदर्भ में की गई है।

यहाँ बच्चे 'बहुवचन' शब्द नहीं जानते पर उनका सार्थक प्रयोग करना बखूबी जानते हैं। भाषा केवल व्याकरण तक सीमित नहीं होती, एक बात को कहने के कई तरीके हो सकते हैं और यही खूबी भाषा को अधिक समृद्ध बनाती है। इसके भी भरपूर अवसर बच्चों को किताब की परिधि में और उसके बाहर दिए जाने चाहिए।

- ❑ **कार्टून** बच्चों को गुदगुदा कर किताब की ओर आकर्षित करते हैं। कार्टून देखने में बच्चों को आनंद तो आता ही है साथ ही अनजाने में वे भाषा भी सीखते हैं। दूसरी किताबों में बने कार्टूनों पर बच्चों से चर्चा करें। बच्चों से स्वयं भी कार्टून बनाने को कहें।
- ❑ किताब में अनेक **चित्र** दिए गए हैं। भाषा सीखने में चित्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। चित्र बच्चों को आकर्षित तो करते ही हैं, सृजनशीलता और विश्लेषण को भी प्रोत्साहित करते हैं। किताब में दिए गए चित्र विविध शैलियों में हैं। चित्रों की शैली एवं बारीकियों की ओर बच्चों का ध्यान दिलवाएँ और चित्रों पर बच्चों से चर्चा करें।

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे!

भारत भाग्य विधाता।

पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा,

द्राविड़, उत्कल बंग।

विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा

उच्छल जलधि-तरंग।

तव शुभ नामे जागे।

तव शुभ आशिष मांगे,

गाहे तव जय गाथा!

जन-गण-मंगलदायक जय हे!

भारत-भाग्य-विधाता।

जय हे! जय हे! जय हे!

जय, जय, जय, जय हे!

- रवींद्रनाथ टैगोर

वंदेमातरम्

वंदेमातरम् वंदेमातरम्

सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्

सस्यश्यामलाम् मातरम् वंदेमातरम्

शुभ्रज्योत्सना पुलकित यामिनी

पुल्ल कुसुमिता द्रुमदल शोभिनी

सुहासिनी सुमधुर भाषिणी

सुखदाम् वरदाम् मातरम्

वंदेमातरम्

- बांकिमचंद्र चटर्जी

सारे जहाँ से अच्छा

सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा।

हम बुलबुलें हैं इसकी, ये गुलसिताँ हमारा।।

परबत वो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमाँ का।

वो संतरी हमारा, वो पासबाँ हमारा।।

गोदी में खेलती हैं, इसकी हज़ारों नदियाँ।

गुलशन है जिनके दम से, रश्क-ए-जिनाँ हमारा।।

मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।

हिंदी हैं हम वतन हैं, हिंदोस्ताँ हमारा।।

- मोहम्मद इकबाल

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है और समस्त भारतीय मेरे भाई-बहन हैं। मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ और इससे प्राप्त विशाल एवं विविध ज्ञान-भंडार पर मुझे गर्व है। मैं सर्वदा इस देश एवं इसके ज्ञान-भंडार के अनुरूप बनने का प्रयास करूँगा। मैं अपने माता-पिता और अध्यापकों तथा समस्त गुरुजनों का आदर करूँगा और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं जीव-जंतुओं से भी प्रेमपूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं अपने देश और उसकी जनता के प्रति अपनी भक्ति की शपथ लेता हूँ। उनके मंगल एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

- पैडिमरि वेंकट सुब्बाराव

क्या कहाँ है?

इकाई	क्र. सं.	पाठ का नाम	विधा	पृष्ठ सं.
I.	1.	कक्कू	कविता	1
	2.	शेखीबाज़ मक्खी	कहानी	7
	3.	चाँद वाली अम्मा	कहानी	15
	4. 	सूरज और चाँद ऊपर क्यों गए मन करता है	पठन हेतु कविता	25
II.	5.	बहादुर बित्तो	कहानी	30
	6. 	मूस की मज़दूरी	पठन हेतु	42
	7.	हमसे सब कहते	कविता	49
	7.	टिपटिपवा	कहानी	49
III.	8.	बंदर-बाँट	संवाद रूपी कहानी	57
	9. 	अक्ल बड़ी या भैंस	पठन हेतु	73
	9.	कब आऊँ	कहानी	73
	10.	क्योंजीमल और कैसे कैसलिया	कहानी	80
	11.	मीरा बहन और बाघ	कहानी	87
IV.	12. 	जब मुझको साँप ने काटा	कहानी	97
	12.	बच्चों के पत्र	पठन हेतु	
	13.	मिर्च का मज़ा	कविता	108
	14.	सबसे अच्छा पेड़	कहानी	116
	14. 	पत्तियों का चिड़ियाघर	पठन हेतु	



ये पाठ केवल पठन हेतु हैं। इन पाठों को मूल्यांकन के लिए न लें। इन पाठों का उद्देश्य बालकों में पठन रुचि विकसित करने तथा मनोरंजन प्राप्ति की ओर आकृष्ट करना है।

सीखने की संप्राप्तियाँ (LEARNING OUTCOMES)

हिंदी (HINDI FL)

कक्षा - तीन (Class-III)

बच्चे--

- ❖ कही जा रही बात, कहानी, कविता आदि को ध्यान से समझते हुए सुनते और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।
- ❖ कहानी, कविता आदि को उपयुक्त उतार-चढ़ाव, गति, प्रवाह और सही पुट के साथ सुनाते हैं।
- ❖ सुनी हुई रचनाओं की विषय-वस्तु, घटनाओं, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं, प्रश्न पूछते हैं, अपनी प्रतिक्रिया देते हैं, राय बताते हैं/अपने तरीके से (कहानी, कविता आदि) अपनी भाषा में व्यक्त करते हैं।
- ❖ आस-पास होने वाली गतिविधियों/घटनाओं और विभिन्न स्थितियों में हुए अपने अनुभवों के बारे में बताते, बातचीत करते और प्रश्न पूछते हैं।
- ❖ कहानी, कविता अथवा अन्य सामग्री को समझते हुए उसमें अपनी कहानी/बात जोड़ते हैं।
- ❖ तरह-तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर आधारित प्रश्न पूछते हैं, अपनी राय देते हैं, शिक्षक एवं अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करते हैं, पूछे गए प्रश्नों के उत्तर (मौखिक/लिखित रूप से) देते हैं।
- ❖ अलग-अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझकर उनका अर्थ सुनिश्चित करते हैं।
- ❖ तरह-तरह की कहानियों, कविताओं/रचनाओं की भाषा की बारीकियों (जैसे-शब्दों की पुनरावृत्ति, संज्ञा, सर्वनाम, विभिन्न विराम-चिह्नों का प्रयोग आदि) की पहचान और प्रयोग करते हैं।
- ❖ स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत वर्तनी के प्रति सचेत होते हुए स्वनियंत्रित लेखन (कनवेंशनल राइटिंग) करते हैं।
- ❖ विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में शब्दों के चुनाव, वाक्य संरचना और लेखन के स्वरूप (जैसे-दोस्त को पत्र लिखना, पत्रिका के संपादक को पत्र लिखना) को लेकर निर्णय लेते हुए लिखते हैं।

